IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

वर्तमान समाज पर स्मार्टफोन के प्रभाव का एक अध्ययन (रीवा जिले के विशेष सन्दर्भ में)

कुलदीप पटेल
शोधार्थी समाजशास्त्र, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म्र.प.)

शोध सारांशः

वर्तमान समाज सामाजिक संबंधों का न होकर सेलफोन अर्थात् मोबाईलफोन का जाल बन चुका है। इसकी उपयोगिता तथा प्रभाव का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सन् 2000 से आरम्भ होकर वर्तमान समय तक के मध्य भारत में सेलफोन का उपयोग समाज के उच्च तबकों से आरम्भ होकर निम्नतम तबकों तक, सरकारी – गैर–सरकारी संस्थानों में, बूढ़ों तथा बच्चों तक सभी में समान रूप से पर्याप्त प्रचलित हो चुका है। इस प्रसिद्धि, प्रचलन तथा प्रयोग ने सचलयंत्र यानि सेलफोन को जहां एक ओर समाज को जोड़ने की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्थापित किया है, वहीं दूसरी ओर यह समाज की चिन्ता का भी विषय बन गया है। आज भारत में लगभग 27 करोड़ मोबाइल फोन उपभोक्ता है। भारत के हर चौथे आदमी के पास मोबाइल फोन है। एक आंकलन के अनुसार भारत में हर घंटे 10 हजार मोबाइल सेट बिक रहें हैं। पिछले ही दिनों मोबाइल फोन उपभोक्ता की संख्या के लिहाज से भारत ने अमेरिका का पीछे छोड़ा है। अब सिर्फ चीन भारत से आगे है। भारत में औसतन एक परिवार में एक से ज्यादा मोबाइल फोन है। एक जमाना था जब मोबाइल फोन का मतलब सिर्फ इतना था कि इससे फोन किया और सुना जा सकता था हालाकि तब भी यह एक आश्चर्य की तरह था क्योंकि इसे हाथ में लेकर कहीं भी आ–जा सकते हैं।1 लेकिन अब मोबाइल फोन का उपयोग बदल गया है। अब सिर्फ फोन करने या सुनने का साधन नहीं बल्कि यह एक साथ कई इलेक्ट्रानिक्स गैजेटर्स का काम करता है।2 अंततः तात्पर्य यह हुआ कि जब हम किसी वस्तु का आवश्यकता से अधिक उपयोग करते हैं तो वह हमारे ऊपर प्रभाव भी अधिक डालता है। मोबाइल फोन का उपयोग भी चाहे कम करें या अधिक वह भी हमारे सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। मनोवैज्ञानिक प्रभाव को यदि जानने की कोशिश करें तो समाज का हर वर्ग मोबाइल फोन के कारण तनाव महसूस करता है। कभी अनावश्यक एस.एम.एस. के कारण तो कभी असमय कॉल के कारण, क्योंकि हम हमेशा किसी भी सूचना के लिए तैयार नहीं हो सकते।

मुख्य शब्द :– मोबाईल/स्मार्टफोन, सामाजिक संबंध, मनोबैज्ञानिक प्रभाव, सूचनातंत्र।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. कम्प्यूटर संचार सूचना, इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली, अगस्त 2008, पृ. – 1.

[2]. कम्प्यूटर संचार सूचना, इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली, अगस्त 2008, पृ. – 3.

[3]. गोयल हेमन्त कुमार, कम्प्यूटर शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो मेरठ, पृ. – 251.

[4]. सर विलियम , स्टुअर्ट (2008); मोबाइल फोन का स्वास्थ्य पर प्रभाव, संचार तकनीकी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, पृ. 32–42.

[5]. मित्तल और कुमार (2000); मोबाइल फोन का कृषि पर प्रभाव एक, आर्थिक विश्लेषण साप्ताहिक शोध पत्र, कृषि आर्थिक रिसर्च, चंडीगढ़, पृ. 71–88.

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, January 2024

[6]. अब्दुल्ला (2003); मोबाइल फोन के उपयोग का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव, इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान– के ए सी एस टी, पी ओ बॉक्सः साउदी अरब पृ.103

[7]. ब्रीतोलिनी (2004); संचार तकनीकी की जानकारी अनाज सुरक्षाके लिए, अंतराष्ट्रीय खाद्य पॉलिसी इंस्टीट्यूट, वाशिंगटन, यू.एस.ए. पृ. 122

[8]. रोथमान विल्सन (2012); सेलफोन और तनाव, एक अध्ययन, एनए, जानपदिक रोग विज्ञान, न्यूयॉर्क, पृ. 303

[9]. Khan, Shabimullah (2011); Switching tendencies of Consumers of mobile Phone services in Madurai District.k~ Journal of Commerce 3(4) p.32-38

[10]. Matti , Haverila (2011); Mobile phone feature Preferences, customer satisfaction and repurchase intent among male users.k~ Australasian Marketing Journal 19(4) p.238-246.

[11]. Plant, S.k~ (2012) On the Mobile: The eff~ects of Mobile Telephones on Social and Individual Life.k~ Motorola, London.k~ Available at.p.94.